अध्याय–१

प्रस्तावना

अध्याय - १

1.1 प्रस्तावना

बाल विकास की प्रारम्भिक अवस्था में दी जाने वाली शिक्षा प्रारम्भिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई.) कहलाती है | यह शिक्षा बच्चो को औपचारिक प्राथमिक शिक्षा के पूर्व प्रदान की जाती है इसीलिए इसे पूर्व प्राथमिक शिक्षा भी कहा जाता है |

बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं | उनके विकास में राष्ट्र को उन्नत तथा दृढ बनाने की द्रष्टि से स्वतंत्र भारत में सभी बच्चो को विकास तथा शिक्षा के सामान अवसर देते हुए विकास का प्रयास किया गया | जिसके लिए सभी बच्चो के लिए अनिवार्य तथा निशुल्क शिक्षा का प्रावधान रखा गया |

बच्चो के विकास कार्यक्रमों तथा योजनाओं के क्रम में सर्व प्रथम १९५३ में केंद्रीय समाज कल्याण विभाग की स्थापना की गयी | इसकी योजना के तहत शहरी क्षेत्र में प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र एच्छिक संस्थान आगे आये तथा ग्रामीण क्षेत्र में "महिला मंडल तथा बालवाडी" कार्यक्रम शुरू हुआ | इसके पश्चात् १९७४ में बच्चो के लिए राष्ट्रीय निति अपनाई गयी | जिसके फलस्वरूप १९७५ में समेकित बाल विकास सेवा योजना शुरू की गयी | इस योजना के अंतगर्त बच्चो के विकास तथा शिक्षा के कार्यक्रमों का निर्धारण हुआ और प्रारम्भिक बाल शिक्षा का विकास हुआ |

राष्ट्रीय शिक्षा निति (१९८६) में भी इसे स्वीकार किया गया | इस निति में प्रारम्भिक बाल शिक्षा को मानव संसाधन विकास हेतु निवेश माना तथा प्राथमिक शिक्षा के पोषक एवं सहायक कार्यक्रम के रूप में शुरू किया | प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम की शुरुआत प्रारंभिक बाल देखभाल तथा शिक्षा कार्यक्रम के रूप में हुई | शिक्षा निति १९८६ ने इस कार्यक्रम को प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए महत्वपूर्ण निवेश माना तथा इसके विकास पर जोर दिया | इसके लिए सम्पूर्ण व्यवस्था बनाने का सुझाव दिया जिसमे बालक के सर्वांगीर्ण विकास को उद्देश्य बनाया गया | बालक के स्वास्थ्य तथा पोषण,. शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक ,नैतिक विकास को बढ़ावा देने उद्देश्य से एक सम्पूर्ण पहुँच के रूप में यह कार्यक्रम प्रस्तावित किया |

राष्ट्रिय शिक्षा निति ने इस बात पर भी बल दिया कि इस अवस्था में बच्चों को लेखन, वाचन तथा अंकन (३आर) तथा औपचारिक शिक्षण पद्धति से दूर रखना चाहिए | प्रारंभिक बल शिक्षा कार्यक्रम खेल पद्धति तथा बालक की व्येक्तिक विशिष्टता पर आधारित होना चाहिए |

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के असमायोजन तथा असफलता के कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से अभी तक प्रारम्भिक बाल शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को प्राप्त नही किया जा सका है | इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ई.सी.ई. के विकास पर विशेष जोर दिया जा रहा है | ९ वीं तथा १० वीं पंचवर्षीय योजनाओं में उसे विशेष स्थान दिया गया | इसे शिक्षा पद्धति के प्रथम स्तर के रूप में स्थापित किया जा रहा है |

इस प्रकम में विद्यालय पाठ्यचर्या २००० ने औपचारिक शिक्षा से पूर्व २ वर्ष की पूर्व विद्यालयी शिक्षा पर जोर दिया | जिसमे अक्षर ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए | यह शिक्षा सभी बच्चों को सामान रूप से मिलनी चाहिए | प्रारंभिक बाल शिक्षा के विकास के क्रम में राष्ट्रिय पाठ्यचर्या रुपरेखा - २००५ ने कहा - बच्चों को उनके विकास हेतु अवसर तथा अनुभव प्रदान कराना आवश्यक है | इसीलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का गठन बच्चो की रूचि तथा प्राथमिकताओं पर आधारित होना चाहिए न कि औपचारिक संरचना के आधार पर इसका गठन व संचालन किया जाना चाहिए | राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा २००५ ने पुन इस तथ्य पर जोर दिया कि बाल शिक्षा में बच्चों के पठन, लेखन, अंकन के विकास हेतु दबाव नही बनाना चाहिए | बल्कि उन्हें सामाजिक तौर पर क्रियाशील बनाने का प्रयास करना चाहिए | जिससे वे प्राथमिक विद्यालय के वातावरण के लिए तैयार हो सकें और विद्यालय कार्यक्रम से सामंजस्य स्थापित कर सकें |

1.2 प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम पर एक द्रष्टि

प्रारम्भिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई.) है -

- ३ से ६ वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा |
- एक बाल केन्द्रित कार्यक्रम |
- खेल पद्धति तथा क्रिया आधारित उपागम |
- बच्चो के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित |

- यह बच्चों को उद्दीपित वातावरण प्रदान करती है -
- बौद्धिक विकास के लिए |
- भाषा विकास के लिए |
- सामाजिक विकास के लिए |
- भावनात्मक विकास के लिए |
- शारीरिक विकास के लिए |
- यह प्राथमिक अवस्था के लिए बच्चों को तत्पर व तैयार करती है|
- यह वाचन, लेखन तथा अंकन के विकास हेतु आधार प्रदान करती है |
- यह वातावरण से अंतक्रिया, सामूहिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी तथा समस्या समाधान के विकास को प्रोत्साहित करती है |
- यह बच्चों को अधिगम अनुभव प्रदान करने पर जोर देती है |
- इसके लिए पूर्व नियोजन की आवश्यकता होती है |
- यह बच्चो की आवश्यकता के अनुसार लचीली होती है |

प्रारम्भिक शिक्षा नही है -:

- एक शिक्षक केन्द्रित कार्यक्रम |
- विद्यालय उपलब्धि पर केन्द्रित एक कार्यक्रम |
- एक निश्चित पाठ्यक्रम में बंधा कार्यक्रम जो ३आर के शिक्षण के लिए बना है |
- प्राथमिक कक्षाओं का निम्न कक्षा विस्तार |
- वाचन, लेखन तथा अंकन का शिक्षण |

1.3 प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता -:

प्रारम्भिक बाल शिक्षा के विकास तथा विस्तार की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है |

- **आधारभूत अवस्था -:** यह सर्वमान सत्य है कि ३ -६ वर्ष आयु बच्चों के विकास की सबसे अधिक प्रभावी अवस्था है | इन्ही वर्षों में बच्चों के भावी व्यक्तित्व की नींव पड़ती है | गांधीजी का कथन है कि - "बच्चा जो कुछ भी जीवन के पांच साल में सीखता है परवर्ती जीवन में कभी - कभी सीखता है |" इस आधारभूत अवस्था में बच्चों में

सामाजिक पक्षपात तथा असमायोजन को उचित वातावरण देकर दूर किया जा सकता है |

- **उपयुक्त शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता -:** सामान्यता यह माना जाता है है कि बच्चों के शैक्षिक रूप से पिछड़े होने का कारण घर में उपयुक्त शैक्षिक वातारण का अभाव होता है अतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा यह कमी पूरी की जा सकती है |
- **सामान शैक्षिक अवसर का प्रावधान -:** प्रारम्भिक बाल शिक्षा की मुख्य आवश्यकता जरूरतमंद तथा वंचित वर्ग के बच्चों को सभी सभी बच्चों के सामान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है | जिसमे सभी लोकतान्त्रिक समाज के निर्माण हेतु मुख्य धारा में शामिल हो सकें |
- **ग्रामीण तथा शहरी बच्चों के बीच अंतर को भरना -:** पूर्व प्राथमिक शिक्षा की सुविधा के विस्तृत प्रावधान की आवश्यकता इसीलिए है ताकि वर्तमान में शहरी संपन्न क्षेत्रों के बच्चों व ग्रामीण तथा छोटे कस्बों के बच्चों के मध्य उत्पन्न शैक्षिक अंतर को भरा जा सके |
- **पूर्व प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा के लिए आवश्यक है -:** अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को प्रभावी रूप से बढ़ने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा के निश्चित तथा संतुष्टिजनक प्रावधान की आवश्यकता है | यह प्राथमिक शिक्षा की सफलता में सहायक है | तथा प्राथमिक स्तर पर अपव्यय को कम करता है |
- **बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए -:** बच्चों का शारीरिक विकास तथा कल्याण पूर्व प्राथमिक शिक्षा का एक अभिन्न अंग है | हमारे देश में अधिकांश बच्चों का उचित पोषण के आभाव में सही शारीरिक विकास नही हो पता | ३-६ वर्ष की आयु में ही कुपोषण तथा शारीरिक विकृति प्रभावशाली रूप से देखने को मिलती है | अतः बच्चों के पोषण व स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है |
- **यह कामकाजी महिलाओं की आवश्यकता है -:** वर्तमान में औद्योगिक तथा आर्थिक द्रढ़ता की मांग के कारण अधिकाँश माताएं कामकाजी तथा नौकरी पेशा हो गयी हैं तथा एकल परिवार रचना के कारण बच्चों को घर का उचित अभिप्रेरित तथा सुरक्षित वातावरण नहीं मिल पाता |

सामाजिक पक्षपात तथा असमायोजन को उचित वातावरण देकर दूर किया जा सकता है |

- **उपयुक्त शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता -:** सामान्यता यह माना जाता है है कि बच्चों के शैक्षिक रूप से पिछड़े होने का कारण घर में उपयुक्त शैक्षिक वातारण का अभाव होता है अतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा यह कमी पूरी की जा सकती है |
- **सामान शैक्षिक अवसर का प्रावधान -:** प्रारम्भिक बाल शिक्षा की मुख्य आवश्यकता जरूरतमंद तथा वंचित वर्ग के बच्चों को सभी सभी बच्चों के सामान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है | जिसमे सभी लोकतान्त्रिक समाज के निर्माण हेतु मुख्य धारा में शामिल हो सकें |
- **ग्रामीण तथा शहरी बच्चों के बीच अंतर को भरना -:** पूर्व प्राथमिक शिक्षा की सुविधा के विस्तृत प्रावधान की आवश्यकता इसीलिए है ताकि वर्तमान में शहरी संपन्न क्षेत्रों के बच्चों व ग्रामीण तथा छोटे कस्बों के बच्चों के मध्य उत्पन्न शैक्षिक अंतर को भरा जा सके |
- **पूर्व प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा के लिए आवश्यक है -:** अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को प्रभावी रूप से बढ़ने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा के निश्चित तथा संतुष्टिजनक प्रावधान की आवश्यकता है | यह प्राथमिक शिक्षा की सफलता में सहायक है | तथा प्राथमिक स्तर पर अपव्यय को कम करता है |
- **बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए -:** बच्चों का शारीरिक विकास तथा कल्याण पूर्व प्राथमिक शिक्षा का एक अभिन्न अंग है | हमारे देश में अधिकांश बच्चों का उचित पोषण के आभाव में सही शारीरिक विकास नही हो पता | ३-६ वर्ष की आयु में ही कुपोषण तथा शारीरिक विकृति प्रभावशाली रूप से देखने को मिलती है | अतः बच्चों के पोषण व स्वास्थ्य के लिए यह आवश्यक है |
- **यह कामकाजी महिलाओं की आवश्यकता है -:** वर्तमान में औद्योगिक तथा आर्थिक द्रढ़ता की मांग के कारण अधिकाँश माताएं कामकाजी तथा नौकरी पेशा हो गयी हैं तथा एकल परिवार रचना के कारण बच्चों को घर का उचित अभिप्रेरित तथा सुरक्षित वातावरण नहीं मिल पाता |

अतः बच्चों की देखभाल तथा प्रारम्भिक शिक्षा हेतु भी पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की आवश्यकता है |

1.4 प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम का महत्व -:

- शिक्षाविदों तथा मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह माना गया है कि ३-६ वर्ष की आयु मानव विकास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है | जो बहुत ही सवेदनशील तथा निर्णयक होती है यह वह अवस्था है जब जीवनभर के विकास आधार,मूल्य और समस्त संभावनाओ के द्वार खुलते हैं |इसी समय में बौद्धिक शक्ति के विकास की संभावना सर्वाधिक होती है अतः इस अवस्था में प्रारम्भिक बाल शिक्षा द्वारा बच्चों के विकास को सही दिशा तथा गति प्रदान की जा सकती है |

- प्रारम्भिक बाक शिक्षा द्वारा बच्चों को उनके सर्वांगीर्ण विकास के लिए पर्याप्त अवसर तथा अनुभव दिए जा सकते हैं |

- बच्चों की स्वास्थ्य - पोषण की जरूरतें मनोवैज्ञानिक, सामजिक और शैक्षणिक विकास अभिन्न रूप से जुड़े हुए पक्ष हैं | प्रारम्भिक बाल शिक्षा द्वारा प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बच्चों के विकास के विभिन्न क्षेत्रो में प्रत्येक स्तर पर बच्चों के लक्षणों और अनुभव के अर्थ में उनकी अधिगम की आवश्यकताओ को ध्यान में रख कर उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है |

- इस शिक्षा के माध्यम से बच्चों की असमर्थताओं को शीघ्र पहचाना जा सकता है तथा उचित अभिप्रेरण द्वारा बच्चों की कमी को दूर करके उसके अहित को रोकने में मदद मिलती है |

- यह एक स्वीकार्य तथ्य है कि बच्चों में सीखने और अपने आसपास की दुनिया को समझने की स्वभाभिक इच्छा होती है | इसीलिए शुरूआती वर्षो में बच्चों की रूचि तथा प्राथमिकताओ के अनुसार अधिगम सरलता से कराया जा सकता है |

- औपचारिक विद्यालय में प्रवेश करने से पहले पूर्व विद्यालयी अवस्था में प्रारम्भिक बाल शिक्षा का अनुभव बच्चों में विद्यालय के प्रति भय को दूर करने तथा सकारात्मक प्रत्यय निर्माण करने में सहायक होती है|

- प्रारम्भिक बाल शिक्षा, घर के अधिक सुरक्षित, सीमित वातावरण और विद्यालय के औपचारिक वातावरण के मध्य सेतु की तरह कार्य करती है | यह बच्चों को विद्यालय के वातावरण के लिए तैयार करती है | तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए सक्रिय बनाती है |

- यह कार्यक्रम उन बच्चों को मजबूत शैक्षिक आधार प्रदान करने में सहायक हैं | जिनकी क्षमता के विकास में उनके माता - पिता का अशिक्षित होना तथा सुविधाओं की कमी बाधक होती है |

1.5 प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्य एवं लक्ष्य -:

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम राष्ट्रिय स्तर का बहुत बड़ा बाल्केंद्रित कार्यक्रम है | यह खेल पद्धति तथा क्रियाओं पर आधारित है | इसका लक्ष्य सभी बच्चों को प्रेम सौहाद्रपूर्ण वातावरण में खेल तथा आनंद के साथ सीखने का अवसर प्रदान करना है |

- **राष्ट्रिय शिक्षा आयोग (१९६४) के अनुसार पुर प्राथमिक शिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्य हैं -:**

  बालक में अच्छे स्वास्थ्य, शारीरिक गठन, मांसपेशिय समन्वय तथा गत्यात्मक कौशलों का विकास करना |

1 बालक में व्यक्तिगत समायोजन के लिए आवश्यक आधारभूत कौशलों तथा स्वस्थ आदतों का निर्माण करना |

2 समूह सहभागिता तथा दूसरों के अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करके बच्चों में वांछित सामालित अभिवृत्ति तथा आचरण विकसित करना |

3 बच्चों में सौन्दर्यानुभूति को प्रोत्साहित करना |

4 बच्चों की बैद्धिक जिज्ञासा का उत्प्रेरित करना तथा उन्हें अपने वातावरण को समझने में सहायता प्रदान करना | उन्हें निरीक्षण, परिक्षण के अवसर प्रदान करके उनमें रुचियों को बढ़ावा देना |

5 आत्म अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करके बच्चों में स्वतंत्रता तथा सर्जनात्मकता को प्रोत्साहित करना |

6 बच्चों में अपने विचार तथा भावों को स्पष्ट तथा शुद्ध भाषा में व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना |

यूनेस्को (UNESCO) की रिपोर्ट -: "दी वर्ल्ड सर्वे ऑफ़ प्री स्कूल एजुकेशन" जिसमे सामाजिक, शैक्षिक विकासात्मक लक्ष्यों ततः बच्चों की देखभाल पर जोर दिया गया है | उसके अनुसार प्रारम्भिक बाल शिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्य हैं |

1 सकारात्मक आत्म प्रत्यय का विकास करना |

2 व्यैतिक स्तर पर बच्चों की क्षमता का विकास करना |

3 समाज के उपयोगी सदस्य बनने के लिए अवसर प्रदान करना तथा अनुकूलता व सहयोगी प्रव्रत्ति को प्रोत्साहित करना |

विशिष्ट उद्धेश्य -:

प्रारंभिक बाल शिक्षा के निम्नलिखित विशिष्ट उद्धेश्य हैं |

- **सामाजिक तथा भावनात्मक विकास -:**
  - सुरक्षा की भावना का विकास करना |
  - बच्चों में स्वस्थ व्यक्तिगत व सामाजिक आदतों का विकास करना |
  - सकारात्मक आत्म प्रत्यय का विकास करना |
  - बच्चों में सामूहिक कार्यों में सहभागिता का विकास करना |
- **शारीरिक विकास -:**
  - मांसपेशिय समन्वय का विकास करना |
  - शारीरिक वृद्धि के रखरखाव की आदतें विकसित करना |
- **भाषा विकास -:**
  - श्रवण कौशल का विकास करना |
  - स्पष्ट व सही भाषा बोलने के कौशल को विकसित करना |
  - शब्दाबली का विकास करना |
- **ज्ञानात्मक विकास -:**
  - समस्या समाधान, वर्गीकरण व व्यवस्थित विचार धारा के कौशलों का विकास करना |
  - विभिन्न संकल्पनाओं जैसे - आकार, रंग, अंक, पर्यावरण, घर के विकास में मदद करना |
- **आत्म अभिव्यक्ति व सौन्दर्यानुभूति का विकास -:**
  - सर्जनात्मक आत्म प्रत्यक्षीकरण का विकास करना |

- बच्चों में आत्म अभिव्यक्ति की भावना का विकास करना |

1.6 पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का वर्तमान परिदृश्य -:

समेकित बाल विकास कार्यक्रम के विस्तार के कारण समाज में बच्चों की देखभाल - कल्याण तथा शिक्षा के लिए कई संस्थाओं की स्थापना हुई | इसमें समाज के सबसे कमजोर वर्ग के बच्चों की देखभाल के लिए आँगनबाड़ियो की स्थापना हुई है | उनके अलावा कई वर्षो से ग्रामीण और शहरी इलाकों में बच्चों की देखभाल के लिए बाल बाड़ियों, झूला घर तथा दिन में बच्चों की देखभाल करने वाले केंद्र भी कार्य कर रहे हैं | जिनकी पहुँच बहुधा माध्यम वर्ग के बच्चों तक है | शहरी तथा अर्ध शहरी क्षेत्रों में अनेक पूर्व प्राथमिक,नर्सरी और किंडर गार्डन स्कूल है | जो आमतौर पर उच्च मध्यम तथा धनी वर्ग के बच्चों की आवश्यकताएं पूरी करते हैं |

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत चल रहे विद्यालयों व केन्द्रों के सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है | कि राष्ट्रिय शिक्षा नीति ने ई.सी.ई.कार्यक्रम के लिए जो मानदंड तैयार किये हैं | उनके अनुसार कार्यक्रमों का निर्माण न के बराबर होता है|

आँगन बाड़ियाँ केवल मध्यान भोजन केंद्र बनकर रह गयी हैं | इसके साथ ही बाल बाड़ियों में प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओ तथा सुविधाओं की कमी है | वहीं शहरी क्षेत्रों में स्थापित पूर्व प्राथमिक विद्यालय, नर्सरी स्कूल आदि व्यावसायिक केंद्र बन गये हैं | जहाँ बच्चों को प्रवेश लेने के लिए परीक्षा देनी पड़ती है | तथा इसकी फीस एक मध्यम वर्ग के परिवार के लिए वहन करना परेशानी का कारण हो जाता है | अथवा फीस वहन करना उनके लिए संभव नहीं होता |

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में कम सुविधा प्राप्त संस्थाओं में बहुत कम स्थान, छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त खेल सामग्री की कमी, सीमित धन और कम शिक्षित व बिना प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक तथा कार्यकर्ताओ की समस्याओं के कारण तथा शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है |

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों का संगठन तथा प्रशासन सीधे केंद्र सरकार के हाथों मै न हो कर एच्छिक व निजी क्षेत्र मई अधिक है |जिसके कारण प्रारम्भिक बाल शिक्षा के प्रारूप व संगठन में व्यापक भिन्नता पाई जाती है | सरकार द्वारा निर्धारित नीतियों व सुझावों के अनुसार इनके कार्यक्रमों में निर्देशन तथा पर्यवेक्षण अभाव भी देखने को मिलता है |

विद्यालयों के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है | कि विद्यालय क्रियाओं के लिए जो अभ्यास क्रम व सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं | वो ऐसी होती हैं जिसके लिए बालक तैयार नही होता ये क्रियाएं बालक के विकास के सम्पूर्ण पक्षों को ध्यान में रख कर तैयार नही की जाती | वर्तमान परिद्रश्य में सूचनाओं तथा ज्ञान के विस्फोट के कारण पूर्व प्राथमिक शिक्षा भी बालक पर अधिक जानने का दबाव बनाती है | यह बालक को किताबी शिक्षा में धकेलती है |अधिकाँश वुद्यालय में खेल क्रियाओं द्वारा शिक्षण पूरक प्रक्रिया के रूप में उपयोग किया जाता है | बालक की शिक्षा सम्पूर्ण रूप से खेल पद्धति पर आधारित नही होती |

प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के अनुसार खेल तथा खेल क्रियाएं ही बच्चो के सम्पूर्ण विकास का माध्यम हैं | इसके माध्यम से ही बच्चों के इन्द्रिय विकास , शारीरिक विकास, सामाजिक सहभागिता, भावनात्मक सुरक्षा, स्वास्थ्यप्रद आदतों का निर्माण किया जाना चाहिए | जिससे बालक ज्ञान का सृजन कर सके |उसके अनुभव उसे शिक्षा व विद्यालय वातावरण के प्रति रूचि उत्पन्न करने में सहायक होनी चाहिए |

1.7 समस्या कथन -:

प्रस्तुत अध्यन का समस्या कथन निम्न लिखित है -:

"क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (भोपाल) में संचालित प्रारंभिक बाल शिक्षा (ई.सी.ई.) कार्यक्रम के वर्तमान परिद्रश्य पर एक अध्ययन |"

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा :-

वर्तमान परिद्रश्य -: प्रस्तुत अध्ययन में "वर्तमान परिद्रश्य" शब्द से तात्पर्य की वास्तविक परिस्थितियों से है | इसमें वर्तमान में संचालित पूर्व प्ताथ्मिक विद्यालय की स्थितियां जैसे - भौतिक सुविधाएँ, उपकरण तथा सामग्री, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधि, शिक्षक की योग्यता, बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास के लिए होने वाली क्रियाएं तथा प्रारम्भिक बाल शिक्षा के प्रति शिक्षकों का द्रष्टिकोण शामिल है |

प्रारम्भिक बाल काल -: यह किसी व्यक्ति के जीवन विकास की एक अवस्था है जो ३ से ६ वर्ष मानी जाती है | इसे पूर्व विद्यालयी अवस्था अथवा प्री गेंग अवस्था भी

कहते हैं |इस अवस्था में विकास की दर तीव्र होती है। इसी दौरान व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा मूल्य अवधारणाओ की नींव पड़ती है।

प्रारम्भिक बाल शिक्षा :- प्रारंभिक बाल शिक्षा ३ से ६ वर्ष समूह के बच्चो की शिक्षा है.जिसमे बच्चो को खेल पद्धति तथा क्रियाप्रधान पद्धति के माध्यम से उनके बौद्धिक शारीरिक,सामाजिक,भाषात्मक,भावात्मक विकास के लिए उत्प्रेरक परिस्थितियां प्रदान की जाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में संचालित प्री.प्राथमिक विद्यालय जो की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित मनको "पूर्व विद्यालयों के लिए न्यूनतम विशिष्टताए" के अनुसार एक वर्णात्मक अध्ययन है।

1.8 अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं -:

1 क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के पूर्व प्राथमिक विद्यालय की भौतिक संरचना तथा सुविधाओं का अध्ययन करना |
2 इस पूर्व प्राथमिक विद्यालय में उपयोग होने वाले उपकरणों तथा सामग्री का अध्ययन करना |
3 इस पुर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको की योग्यता का अध्ययन करना |
4 इस पूर्व प्राथमिक विद्यालय में नियुक्त शिक्षकों में बाल शिक्षा कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना |
5 पूर्व प्राथमिक विद्यालय में प्रस्तुत होने शैक्षिक प्रविधि का अध्ययन करना |
6 पूर्व प्राथमिक विद्यालय में होने वाली शैक्षिक क्रियाओं तथा कार्यक्रमों
7 पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करना |

1.9 परिकल्पना :-

प्रस्तुत अध्ययन एक विवरणात्मक संस्थागत अध्ययन है | इसका परिणाम निष्कर्ष के द्वारा दर्शाया गया है |

1.10 अध्ययन का परिसीमन :-

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएं हैं -: